क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277to 81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 314 वॉ वर्ष है

क्रम संख्या .....

दिनॉक :

क्रियायोग माघमेला समाचार - 27 जनवरी 2014

गणतंत्र दिवस का वास्तविक स्वरूप

27 जनवरी, 2014 इलाहाबाद। समाधि की अवस्था में अनुभव होता है कि क्रियायोग ध्यान की महिमा की अनुभूति गणतंत्र दिवस का वास्तविक समारोह है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर उक्त विचार को स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने माघमेले में त्रिवेणी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर में आये हुए सभी श्रद्धालुओं को अनुभव कराया। इस अवसर पर अमरीका, कनॉडा, यूरोप, ब्राजील, सिंगापुर आदि देशों से आये हुए भक्तों के साथ साथ भारतीय भक्तों की भारी संख्या उपस्थित थी।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने गणतंत्र दिवस में छिपी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान में इन्ट्यूशन जागृत होने पर गणतंत्र दिवस में छिपा सही भाव अनुभव होने लगता है। गण का अभिप्राय समूह, तंत्र का अभिप्राय समूह से जुड़ी हुई शाश्वत् नियमावली तथा दिवस का अभिप्राय ज्ञान से है। जनसमूह को गण कहा गया है। वर्तमान में हम जिस जनसमूह के साथ हैं, ये जनसमूह किसी और रूप में अतीत में भी था और किसी अन्य रुप में भविष्य में भी रहेगा। जनसमूह से संबंधित इस शाश्वत् नियमावली को तंत्र कहते हैं और इसका ज्ञान होना ही दिवस कहा जाता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी ज्ञान की अनुभूति कराया था। अर्जुन को समझाते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया था कि हे अर्जुन, हम तुम और सभी कौरव पाण्डवगण पहले भी थे और ये आगे भी रहेंगें। इस तरह से हम सब सनातन हैं। यह अनुभूति ही सच्चा ज्ञान है जिसे दिवस कहते हैं। स्पष्ट है कि गणतंत्र दिवस का अभिप्राय इस ज्ञान से जुड़ना जिसमें अनुभव होता है कि हम सब सनातन हैं, पहले भी थे आज भी हैं और आगे भी रहेंगे।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि सनातन ज्ञान की व्यापक अनुभूति में यह भी पता चलता है कि ज्ञान के पूर्ण रूप को तीन तरह से अनुभव करते हैं जिसे सृजन ब्रह्मा का ज्ञान, सुरक्षा का ज्ञान परिवर्तन का ज्ञान, परिवर्तन का ज्ञान शिव का ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान की अनुभूति होते ही मनुष्य अनुभव करता है कि वह सनातन है और उसका स्वभाव सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और परमानन्द है।

- शेष अगले पृष्ठ पर

क्रियायोग ध्यान पूर्ण ज्ञान तत्व है जिसमें डुबकी लगाने पर इसके अंदर श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, 108 उपनिषद व हिन्दू दर्शन षटदर्शन, बाइबिल, कुरान इत्यादि में निहित ज्ञान की अनुभूति होती है और इसके साथ साथ इन्जीनियरिन्ग, मेडिकल विज्ञान, नक्षत्र व ज्योतिष विज्ञान, इतिहास से संबंधित सम्पूर्ण ज्ञान की अनुभूति होती है। संक्षेप में क्रियायोग पूर्ण ज्ञान तत्व के रुप में है।

क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान क्रियायोग ध्यान का विधिवत् अभ्यास कराते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य की जन्मों-जन्मों की इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं और वह प्रतिपल पूर्ण ज्ञान तत्व से एकता की अनुभूति कर लेता है। ऐसी अवस्था में वह स्वरुप तथा ब्रह्माण्ड की किसी भी रचना का इच्छानुसार सृजन, संरक्षण तथा परिवर्तन करने के अलौकिक ज्ञान से विभूषित हो जाता है। यही अपने अंदर ब्रह्मा, विष्णु और शिव शक्ति का दर्शन करना है। जैसे ही क्रियायोग ध्यान की अनुभूति से साधक अलग होता है उसके अंदर विद्यमान विराट ज्ञान सुषुप्त हो जाता है और वह अपने परमानन्दमय, ज्ञानमय, शांतिमय स्वरुप को विस्मृत कर दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से ग्रसित हो जाता है।

त्रिवेणी रोड पर पाण्टून ब्रिज के बगल गंगा के तट पर मानव कल्याण के लिए प्रतिदिन निःशुल्क क्रियायोग की कक्षाएँ चल रही हैं। क्रियायोग ध्यान का समय प्रातः 7 से 9 व अपराहन 2 से 6 बजे तक है।

- योगमाता